

ग्रेशम का नयिम और मुद्रा वनिमिय दर

स्रोत: द हट्टि

प्रलिमिस के लयि:

स्थरि वनिमिय दर, चल और प्रबंधति चल वनिमिय दर, ब्रेटन वुड्स सम्मेलन, [श्रीलंकाई संकट- 2022, मुद्रासफीति](#)

मेन्स के लयि :

स्थरि वनिमिय दरों के फायदे और नुकसान, नश्चति वनिमिय दरों के वकिल्प

चर्चा में क्यों?

ग्रेशम का नयिम, जसिका श्रेय अंग्रेज़ फाइनेंसर थॉमस ग्रेशम को दयिा जाता है, [श्रीलंका में वर्ष 2022 के आर्थिक संकट](#) का एक महत्त्वपूर्ण कारक था। यह संकट श्रीलंका के सेंट्रल बैंक द्वारा [श्रीलंकाई रुपए और अमेरिकी डॉलर](#) के बीच एक [स्थरि वनिमिय दर](#) को लागू करने के कारण उत्पन्न हुआ था।

ग्रेशम का नयिम:

- **ग्रेशम का नयिम** एक मौद्रिक सिद्धांत है जो बताता है कि "बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है"। बुरी मुद्रा वह मुद्रा है जसिका मूल्य उसके अंकति मूल्य के बराबर या उससे कम है। **अच्छी मुद्रा** में उसके अंकति मूल्य से अधिक मूल्य की संभावना होती है।
 - इसका मतलब यह है कि यदि एक उच्च आंतरिक मूल्य के साथ और एक कम आंतरिक मूल्य के साथ दो प्रकार की [मुद्राएं प्रचलन](#) में हैं, तो लोग अधिक मूल्यवान धन जमा करेंगे और कम मूल्यवान धन व्यय करेंगे।
 - परिणामस्वरूप कम मूल्यवान मुद्रा बाज़ार पर हावी हो जाएगी, जबकि अधिक मूल्यवान मुद्रा प्रचलन से गायब हो जाएगी।
 - यह नयिम तब लागू होता है जब सरकार दो मुद्राओं के बीच वनिमिय दर तय करती है, जसिसे आधिकारिक दर और बाज़ार दर के बीच असमानता उत्पन्न होती है।
 - यह न केवल कागज़ी मुद्राओं पर बल्कि किमोडिटी मुद्राओं और अन्य वस्तुओं पर भी लागू होता है।
- **ग्रेशम के नयिम के क्रयान्वयन के उदाहरण:**
 - ग्रेशम का नयिम [श्रीलंका के आर्थिक संकट](#) के दौरान तब महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन गया जब देश के सेंट्रल बैंक द्वारा [श्रीलंकाई रुपए और अमेरिकी डॉलर](#) के बीच एक [स्थरि वनिमिय दर](#) निर्धारित की गई।
 - अनौपचारिक बाज़ार दरों से पता चलता है कि अमेरिकी डॉलर का मूल्य बहुत अधिक है, इसके बावजूद सरकार ने एक [अमेरिकी डॉलर के लयि 200 श्रीलंकाई रुपए की स्थरि दर पर ज़ोर](#) दयिा।
 - इसके कारण [श्रीलंकाई रुपए को वास्तव में उससे अधिक मूल्यवान माना जाने लगा](#) और अमेरिकी डॉलर का बाज़ार दरों के अनुसार कम मूल्यांकन कयिा गया।
 - परिणामस्वरूप [आधिकारिक वदिशी मुद्रा बाज़ार में कम अमेरिकी डॉलर उपलब्ध थे](#) और व्यक्तियों ने आधिकारिक लेन-देन में उनका उपयोग करने से बचना शुरू कर दयिा।
- **ग्रेशम के नयिम की वषिमता:**
 - [ग्रेशम के नयिम](#) के वषिरीत थयिर्स का नयिम एक ऐसी घटना पर प्रकाश डालता है जहाँ "अच्छी मुद्रा, बुरी मुद्रा को प्रचलन से बाहर कर देती है।" मुक्त वनिमिय दर के माहौल में लोग उच्च-गुणवत्ता वाली मुद्राओं को पसंद करते हैं और जिन्हें नमिनतर मानते हैं उन मुद्राओं को धीरे-धीरे त्याग देते हैं।
 - हाल के वर्षों में [नजी करपिटोकरेंसी \(अच्छी मुद्रा\)](#) के उदय को प्रायः इस उदाहरण के रूप में उद्धृत कयिा जाता है कि कैसे सुप्रसिद्ध, नजी मुद्रा उत्पादक सरकार द्वारा जारी मुद्राओं (बुरी मुद्रा) को वसिथापति कर सकते हैं।

स्थरि वनिमिय दर(Fixed Exchange Rate):

- **परिचय:**
 - नश्चिति वनिमिय दर, जसि **अधिकीलति वनिमिय दर (Pegged Exchange Rate)** भी कहा जाता है, कसिी सरकार या केंद्रीय बैंक द्वारा लागू एक व्यवस्था है जो देश की आधिकारिक मुद्रा वनिमिय दर को दूसरे देश की मुद्रा या सोने की कीमत से जोड़ती है।
 - स्थिर वनिमिय दर प्रणाली का उद्देश्य मुद्रा के मूल्य को एक संकीर्ण दायरे में रखना है।
- **इतिहास:**
 - वर्ष 1944 में हुए **ब्रेटन वुड्स सम्मेलन** ने अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली की स्थापना की, जो स्थिर वनिमिय दरों की वशिषता थी।
 - सम्मेलन में भाग लेने वाले देश अपनी मुद्राओं को अमेरिकी डॉलर से जोड़ने पर सहमत हुए, जसि 35 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस की नश्चिति दर पर सोने में परिवर्तित किया जा सकता था।
 - इसका उद्देश्य **स्थिरता को बढ़ावा देना और मुद्राओं के प्रतस्पर्द्धी अवमूल्यन को रोकना था**, जसिने महामंदी एवं **द्वितीय विश्व युद्ध** के दौरान आर्थिक अस्थिरता में योगदान दिया था।
- **पतन:**
 - ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में स्थापित स्थिर वनिमिय दर प्रणाली का पतन नरिंतर व्यापार असंतुलन, **मुद्रास्फीति**, **स्पेक्यूलेटिव अटैक्स** (कसिी देश की मुद्रा की बड़े पैमाने पर और अचानक बकिरी), वनिमिय दर समायोजन की कमी और घटते अमेरिकी सोने के भंडार के कारण हुआ था।
 - वर्ष 1971 में "**नकिसन शॉक्स**", जसिमें अमेरिकी डॉलर की सोने में परिवर्तनीयता को नलिंबति करना शामिल था, ने प्रणाली के पतन को चहिनति किया।
 - इसने **प्रमुख मुद्राओं को परिवर्तनीय वनिमिय दरों (Floating Exchange Rates)** में परिवर्तित कर दिया, जसिसे आर्थिक स्थितियों के जवाब में लचीलेपन की अनुमति मिली।

स्थिर वनिमिय दरों के लाभ और हानियाँ:

- **लाभ:**
 - **मूल्य स्थिरता:** स्थिर वनिमिय दरें मूल्य स्थिरता प्रदान कर सकती हैं। यह स्थिरता उच्च मुद्रास्फीति दर या अस्थिर मुद्रा वाले देशों के लिये वशिष रूप से लाभदायक हो सकती है।
 - **कम लेन-देन लागत:** एक नश्चिति वनिमिय दर प्रणाली में अंतरराष्ट्रीय व्यापार में लगे व्यवसायों को मुद्रा-संबंधित लेन-देन लागतों जैसे- मुद्रा रूपांतरण शुल्क और वनिमिय दर जोखिम प्रबंधन खर्चों का कम सामना करना पड़ सकता है।
 - **नविशक का वशिवास:** नश्चिति वनिमिय दरें नविशकों का वशिवास बढ़ा सकती हैं। स्थिर मुद्रा वाले देश में नविशकों द्वारा पूंजी लगाने की अधिक संभावना होती है, जसिसे पूंजी की लागत कम हो जाती है और संभावित रूप से आर्थिक विकास में तेज़ी आती है।
- **हानि:**
 - **मौद्रिक नीति की स्वायत्तता की हानि:** एक महत्त्वपूर्ण कमी यह है कि स्थिर वनिमिय दरों को अपनाने वाले देश अपनी **मौद्रिक नीति** पर नयित्रण छोड़ देते हैं।
 - अधिकीलति वनिमिय दर को बनाए रखने के लिये उन्हें एंकर मुद्रा की नीतियों के अनुसार ब्याज दरों और धन आपूर्ति को समायोजित करने की आवश्यकता हो सकती है, जो उनकी घरेलू आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हो सकती है।
 - **संभावित हमले:** नश्चिति वनिमिय दर प्रणालियों सट्टा हमलों के प्रति संवेदनशील हो सकती हैं।
 - यदि नविशकों को लगता है कि कसिी देश की मुद्रा का मूल्य अधिक है, तो वे बड़े पैमाने पर सेल ऑफ कर सकते हैं, जसिसे केंद्रीय बैंक को अधिकीलति वनिमिय दर बनाए रखने के लिये अपने वदिशी मुद्रा भंडार को समाप्त करने हेतु मजबूर होना पड़ेगा।
 - **बाहरी नरिभरता:** नश्चिति वनिमिय दर प्रणालियों कसिी देश के भविष्य को एंकर मुद्रा जारीकर्त्ता की स्थिरता और नीतियों से जोड़ती हैं।
 - यदि एंकर मुद्रा को समस्याओं का सामना करना पड़ता है, तो इसका असर संबंधित देश के वनिमिय दर पर भी पड़ सकता है।

स्थिर वनिमिय दरों के विकल्प:

- **फ्लोटिंग वनिमिय दर:** इसे लचीली वनिमिय दर के रूप में भी जाना जाता है, यह एक ऐसी प्रणाली है जहाँ मुद्रा का मूल्य वदिशी मुद्रा बाज़ार में आपूर्ति और मांग से नरिधारित होता है।
 - इस प्रणाली में वनिमिय दर में लगातार उतार-चढ़ाव हो सकता है और आधिकारिक तौर पर यह कसिी अन्य मुद्रा या वस्तु से जुड़ी या तय नहीं की जाती है।
 - फ्लोटिंग वनिमिय दरें मुद्राओं को आर्थिक स्थितियों, व्यापार असंतुलन और बाज़ार की ताकतों के लिये स्वतंत्र रूप से समायोजित करने की अनुमति देती हैं।
 - उदाहरण: कनाडा और ऑस्ट्रेलिया।
- **प्रबंधित फ्लोट (Managed Float):** प्रबंधित फ्लोटिंग वनिमिय दर (Managed Float Exchange Rate), जसि डर्टी फ्लोट भी कहा जाता है, एक ऐसी प्रणाली है जहाँ कसिी देश का केंद्रीय बैंक या सरकार अपनी मुद्रा के मूल्य को प्रभावित करने के लिये कभी-कभी वदिशी मुद्रा बाज़ार में हस्तक्षेप करती है।
 - जबकि वनिमिय दर में कुछ हद तक परिवर्तन संभव है, अधिकारी कुछ आर्थिक लक्ष्यों के जवाब में इसके मूल्य को स्थिर करने या प्रबंधित करने या अत्यधिक अस्थिरता को रोकने के लिये अपनी मुद्रा खरीद या बेच सकते हैं।
 - उदाहरण: भारत और चीन।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

प्रश्न. भारतीय रुपए के अवमूल्यन को रोकने के लिये सरकार/RBI द्वारा नमिनलखिति में से कौन सा सबसे संभावति उपाय नहीं है? (2019)

- (a) गैर-आवश्यक वस्तुओं के आयात पर अंकुश लगाना और नरियात को बढ़ावा देना ।
- (b) भारतीय उधारकर्ताओं को रुपया मूल्यवर्ग मसाला बॉण्ड जारी करने के लिये प्रोत्साहति करना ।
- (c) बाहरी वाणजियकि उधार से संबंधति शर्तों को आसान बनाना ।
- (d) वस्तितारवादी मौद्रकि नीतिका अनुसरण ।

उत्तर: (d)

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयि:(2021)

1. कसिी मुद्रा के अवमूल्यन का प्रभाव यह होता है कविह आवश्यक रूप से:
2. वदिशी बाज़ारों में घरेलू नरियात की प्रतसिप्रद्धात्मकता में सुधार करता है ।
3. घरेलू मुद्रा के वदिशी मूल्य को बढ़ाता है ।
4. व्यापार संतुलन में सुधार करता है ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 3
- (d) केवल 2 और 3

उत्तर: (a)

??????:

प्रश्न. वशि्व व्यापार में संरक्षणवाद और मुद्रा चालबाज़यिों की हाल की घटनाएँ भारत की समष्टिआर्थकि स्थरिता को कसि प्रकार से प्रभावति करेगी? (2018)